११ दो लघुकथाएँ

– त्रिलोक सिंह ठकुरेला

मौन

रघुराज सिंह बहुत खुश थे । उनके लड़के से अपनी लड़की का रिश्ता करने की इच्छा से अजमेर से एक संपन्न एवं सुसंस्कृत परिवार आया था । रघुराज सिंह का लड़का सेना में अधिकारी है । उनके दो अन्य लड़के उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं ।

लड़की के पिता ने रघुराज सिंह से कहा – ''हम आपसे एवं आपके परिवार से पूरी तरह संतुष्ट हैं । आप भी हमारी लड़की को देख लें एवं हमारे परिवार के बारे में पूरी जानकारी कर लें ।''

रघुराज सिंह ने कहा – ''जानकारी लेने की कोई जरूरत नहीं है । हम भी आपसे पूरी तरह संतुष्ट हैं ।''

लड़की के पिता ने पूछा – ''आपकी कोई माँग हो तो हमें बताने की कृपा करें ।''

रघुराज सिंह बोले – ''हमारी कोई माँग नहीं है । बस, चाहते हैं, लड़की ऐसी हो जो परिवार में विघटन न कराए । चाहता हूँ, तीनों भाई मिलकर रहें ।''

''इससे बढ़कर क्या बात हो सकती है । जब बच्चों को अच्छे संस्कार मिलते हैं तो पूरा परिवार एक सूत्र में बँधा रहता है ।'' लड़की के पिता ने विनम्रतापूर्वक कहते हुए पूछा – ''साहब, आप कितने भाई हैं ?''

रघुराज सिंह ने कहा – ''तीन भाई, एक बहिन''

लड़की के पिता ने पूछा – ''आपके भाई क्या करते हैं ?''

रघुराज सिंह – ''सबके निजी धंधे हैं ।''

लड़की के पिता ने पूछा – ''आपने अपने किसी भाई को बुलवाया नहीं ?''

रघुराज सिंह झिझकते हुए बोले – ''अजी, हम भाइयों में बोलचाल बंद है ।''

अचानक वहाँ खामोशी छा गई । प्रश्न और उत्तर दोनों ही मौन थे ।

× × × × × × × × ×

असाधारण

मुझे जोधपुर जाना था । बस आने में देरी थी । अतः बस स्टॉप पर बस के इंतजार में बैठा था । वहाँ बहुत से यात्रियों का जमघट लगा हुआ था ।

परिचय

जन्म : १९६६,

परिचय : त्रिलोक सिंह ठकुरेला जी ने कुंडलिया छंद के विकास के लिए अद्‌वितीय कार्य किया है ।

प्रमुख कृतियाँ : 'नया सवेरा' (बाल साहित्य), 'काव्यगंधा' (कुंडलिया संग्रह), 'आधुनिक हिंदी लघुकथाएँ', 'कुंडलिया छंद के सात हस्ताक्षर', 'कुंडलिया कानन', 'कुंडलिया संचयन', 'समसामयिक हिंदी लघुकथाएँ', 'कुंडलिया छंद के नये शिखर' आदि संपादन ।

गद्‌य संबंधी

यहाँ दो लघुकथाएँ दी गई हैं । प्रथम लघुकथा में त्रिलोक सिंह ठकुरेला जी ने लोगों की कथनी और करनी में अंतर पर करारा प्रहार किया है । दूसरी लघुकथा में आपने एक पॉलिश करने वाले बालक के स्वाभिमान को दर्शाया है । इन लघुकथाओं के माध्यम से लेखक ने संदेश दिया है कि हमारी सोच और व्यवहार में समरूपता होनी चाहिए। स्वाभिमान किसी में भी हो सकता है । हमें सभी के स्वाभिमान का आदर करना चाहिए।

सभी बातों में मशगूल थे अतः अच्छा-खासा शोर हो रहा था ।

अचानक एक आवाज ने मेरा ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया । एक दस वर्षीय लड़का फटा-सा बैग लटकाए निवेदन कर रहा था – ''बाबू जी, पॉलिश करा लो ।''

मेरे मना करने पर उसने विनीत मुद्रा में कहा – ''बाबू जी, करा लो । जूते चमका दूँगा । अभी तक मेरी बोहनी नहीं हुई है ।''

मैं घर से जूते पॉलिश करके आया था अतः मैंने उसे स्पष्ट मना कर दिया ।

वह दूसरे यात्री के पास जाकर विनय करने लगा । मैं उसी ओर देखने लगा । वह रह-रहकर यात्रियों से अनुनय-विनय कर रहा था- ''बाबू जी, पॉलिश करा लो । जूते चमका दूँगा । अभी तक मेरी बोहनी नहीं हुई है ।''

मेरे पास ही एक सज्जन बैठे थे । वे भी उस लड़के को बड़े गौर से देख रहे थे । शायद उन्हें उसपर दया आई । उन्होंने उसे पुकारा तो वह प्रसन्न होकर उनके पास आया और वहीं बैठ गया ।

''बाबू जी, उतारो जूते ।''

उन्होंने कहा- ''भाई, पॉलिश नहीं करानी है । ले, यह पाँच रुपये रख ले ।''

''क्यों बाबू जी ?'' उसने बड़े भोलेपन से कहा ।

वे सज्जन बड़े प्यार से बोले – ''रख ले । तेरी बोहनी नहीं हुई है, इसलिए ।''

लड़का झटके से खड़ा हुआ- ''बाबू जी, भिखारी नहीं हूँ । मेहनत करके खाना चाहता हूँ । बिना पॉलिश किए रुपये क्यों लूँ?'' यह कहते हुए वह आगे बढ़ गया ।

पॉलिश करने वाले लड़के के चेहरे पर स्वाभिमान का असाधारण तेज देखकर लोग दंग रह गए ।

('समसामयिक हिंदी लघुकथाएँ' से)

— ० —

लेखनीय

''बाल श्रम'' पर लगा प्रतिबंध कितना सफल सिद्‌ध हुआ है, इसकी जानकारी के लिए अपने परिसर का सर्वेक्षण कीजिए । सर्वेक्षण के आधार पर अपनी रपट/ अनुभव लिखिए ।

संभाषणीय

स्पर्धा के लिए 'अतिथि देवो भव' विषय पर भाषण तैयार करके सुनाइए ।

पठनीय

'संयुक्त परिवार आजकल विघटित होते जा रहे हैं, इसपर जानकारी पढ़कर निबंध लेखन कीजिए ।

श्रवणीय

रेडियो/दूरदर्शन, यू ट्यूब से राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन.सी.सी) की जानकारी सुनिए ।

शब्द संसार

विघटन सं. पुं.(सं.) = अलग करना
जमघट पुं. सं.(हिं) = भीड़
अनुनय पुं. सं.(सं.) = खुशामद, विनय

मुहावरा

दंग रह जाना = आश्चर्यचकित होना

स्वाध्याय

✲ सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

लड़के के परिवार की विशेषताएँ

(२) कृति पूर्ण कीजिए :

लड़के के पिता की बहू से अपेक्षाएँ

(३) कारण लिखिए :

१. अचानक खामोशी छा गई – ------------

२. लड़के के चाचा जी नहीं आए थे – ------------

३. लड़के का चेहरा देखकर लोग आश्चर्य करने लगे – ------------

४. लड़के ने सज्जन के दिए रुपये लौटाए – ------------

(४) लिखिए :

बस स्टॉप का वातावरण

अभिव्यक्ति

'परिश्रम और स्वाभिमान से जिंदगी बिताने में आनंद की प्राप्ति होती है' इसपर अपने विचार लिखिए ।

उपयोजित लेखन

वक्तृत्व प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पाने के उपलक्ष्य में आपके मित्र/सहेली ने आपको बधाई पत्र भेजा है, उसे धन्यवाद देते हुए निम्न प्रारूप में पत्र लिखिए :

दिनांक : ....

संबोधन : ....

अभिवादन : ....

प्रारंभ :

विषय विवेचन :

तुम्हारा/तुम्हारी,

....

नाम : ....

पता : ....

ई–मेल आईडी : ....

7GBASA

भाषा बिंदु

पढ़िए और समझिए :-

छंद

छंद ह्रस्व/लघु (।) और दीर्घ/गुरु (ऽ) इन दो स्वरों से संबंधित होते हैं । ह्रस्व (।) तथा दीर्घ (ऽ) को **'मात्रा चिह्न'** कहते हैं । व्यंजनों का मेल स्वरों के साथ होता है परंतु स्वररहित व्यंजन में मात्राएँ गिनी नहीं जाती हैं ।

- संयुक्त वर्ण के पहले आया हुआ लघु वर्ण भी गुरु होता है । जैसे-सत्य में 'स' गुरु होगा ।

संयुक्त वर्ण की मात्रा लघु होती है ।

लघु (।)

ऽ । ऽ ।
- रक्त - र् + अ + क् + त् + अ

क्, त् और र् मात्रा रहित हैं ।
- 'रक्त' में तीन मात्राएँ होंगी ।

ध्यान दें

- मात्रा गणना में लघु (।) =१ गिना जाता है ।
- अ, इ, उ - इन ह्रस्व स्वरों तथा इससे युक्त एक व्यंजन या संयुक्त व्यंजन को 'लघु' गिना जाता है ।
- चंद्रबिंदुवाले ह्रस्व स्वर भी लघु होते हैं । जैसे - 'अँ' ।
- कमल = तीनों वर्ण लघु हों तो मात्रा चिह्न हुए ।।। = ३

दीर्घ (ऽ)

ऽ ऽ ऽ ऽ
- राधा = र् + आ + ध् + आ
- 'राधा' शब्द में चार मात्राएँ होंगी ।

ध्यान दें

- आ, ई, ऊ - दीर्घ स्वर और इनसे युक्त व्यंजन गुरु होते हैं ।
- ए, ऐ, ओ, औ - ये संयुक्त स्वर और इनसे मिले व्यंजन गुरु होते हैं ।
- अनुस्वारयुक्त वर्ण, विसर्गयुक्त वर्ण भी गुरु होते हैं ।
- राजा, दीदी के मात्राचिह्न = ऽऽ, ऽऽ

सोरठा

- **यह अर्धसम मात्रिक छंद है ।**
- **इसमें चार चरण होते हैं ।**
- **विषम चरणों में ११-११ मात्राएँ और सम चरणों में १३-१३ मात्राएँ होती हैं ।**

उदाहरण

|| ऽ ।। ऽ ऽ।
(१) सुनि केवट के बैन,
११ २११ २ २१
} = ११ मात्राएँ — **प्रथम चरण**

ऽ। ।ऽ ऽ ।।।ऽ
(२) प्रेम लपेटे अटपटे ।
२१ १२२ १११२
} = १३ मात्राएँ — **द्वितीय चरण**

।।ऽ ।।ऽ ।।।
(३) विहँसे करुणा अयन,
११२ ११२ १११
} = ११ मात्राएँ — **तृतीय चरण**

।।। ऽ।ऽ ।।। ।।
(४) चितइ जानकी लखन तन ।।
१११ २१२ १११ ११
} = १३ मात्राएँ — **चतुर्थ चरण**